हांणे हितरयूं गाल्यूं को करयो, को झोडो बधारयो।
हे झोडो सभे त चुके, जे असांजा लाड पारयो।। ९४ ।।

अब इतनी बातें क्यों करते हो? झगड़ा क्यों बढ़ा रहे हो? यह झगड़ा तो तब समाप्त हो जाए, जो हमारी चाहना आप पूरी कर दो।

तूं कितेई भगो न छुटे, अर्स में मूं मांध।
लाड पाराइयां पांहिजा, पुजी पल्लो पांध।। ९५ ।।

परमधाम में आप मेरे सामने से भागने पर भी नहीं छूटेंगे। मैं आपका पल्ला पकड़कर अपनी चाहना पूरी कराऊंगी।

अंईं कितेई छुटी न सगे, आंऊं किएं न छडियां आं।
महामत चोए मूं दुलहा, पार सघरा लाड असां।। ९६ ।।

आप किसी तरह से छूट नहीं सकते। मैं भी किसी तरह से आपको नहीं छोड़ूंगी। श्री महामतिजी कहते हैं कि हे मेरे दूल्हा! आप हमारी सब इच्छाओं को पूरा कर दो।

।। प्रकरण ।। ७ ।। चौपाई ।। ३४१ ।।

बाब जाहेर थियणजा

रूह-अल्ला डिंन्यूं निसानियूं, जे लिख्यूं मय फुरमान।
से सभ मिडाए दाखला, करे डिंनाऊं पेहेचान।। १ ।।

रूह अल्लाह श्री श्यामाजी महारानी (श्री देवचन्द्रजी) ने जो निशान बताए, वह कुरान में लिखे हैं। उन सबको मिलाकर पहचान करा दी।

न तां केर रांद केडी आए, हे रूहें को जांणे।
डियण असांके सुखडा, तो उपाइए पांणे।। २ ।।

नहीं तो कौन सा खेल, कैसा खेल? यह रूहें क्या जानें? हमको सुख देने के वास्ते श्री राजजी महाराज ने ही हमारे दिल में उपजाया।

न कीं जाणूं रांद के, आं दिल उपाई पांण।
डियण असांके सुखडा, हे दिलमें आईम जांण।। ३ ।।

हम तो खेल को जानते नहीं थे। आपने हमारे दिल में यह पैदा किया। हमको सुख देने के वास्ते यह बात आपके दिल में आई।

हे जा हित रांदडी, केइयां असां कारण।
त असां कीं पसाइए डुखडा, असीं आयासी न्हारण।। ४ ।।

यह जो खेल बनाया हमारे वास्ते बनाया, तो फिर हमको दुःख क्यों होता है? हम तो देखने के लिए आये हैं।

केआंऊं वडी रांदडी, कागर मूक्यो कीं हित।
डियण साहेदी सभनी, लिख्या लखे भत।। ५ ।।

यह खेल हमारे वास्ते बनाया। ऊपर से कुरान-पुरान की चिट्ठी क्यों भेज दी? हमको गवाही देने के वास्ते आपने लाखों तरह से लिखा।

Nijanand App

पांण केयां को पधरो, उपटे बका दर।
मूकियां रूह अर्स जी, डेई संडेहो कुंजी कागर।।६ ।।

आपने अखण्ड परमधाम के दरवाजे खोलकर अपने आपको जाहिर क्यों किया? परमधाम की बड़ी रूह श्री श्यामाजी को तारतम कुंजी से सन्देश देकर क्यों भेजा?

मांधा जणाया सभ के, डियण के आकीन।
ईंदो रब आलम जो, सभ कंदो हिक दीन।।७ ।।

आपने पहले से ही जानकारी दे दी कि लोगों को विश्वास आ जाए कि आप सारे जगत के मालिक आने वाले हैं। जो एक दीन निजानन्द सम्प्रदाय की स्थापना करेंगे।

हिन जिमीमें पातसाही, कंदो चारीस साल।
चई खुटे पुंना कागर, जाहेर केयाऊं गाल।।८ ।।

वह बड़ी रूह श्री श्यामाजी इस दुनियां में आकर चालीस वर्ष (सम्वत् १७३५ से १७७५) तक दुनियां में बादशाही करेंगे। आपकी यह चिट्ठी चारों तरफ पहुंच गई और यह बात सब में जाहिर हो गई।

असीं आया आंजे हुकमें, मंझ लैलत कदर।
सौ साल रख्या ढंकई, जाहेर केयां आखिर।।९ ।।

हम भी आपके हुकम से लैल तुल कदर की रात में आए, जिसे सौ साल तक छिपाकर रखा और आखिर में सम्वत् १७३५ में जाहिर किया।

हजार साल दुनीजा, सो हिकडो डींह रब जो।
से डींह रात बए गुजरया, कियां जाहेर रोज-फरदो।।१० ।।

दुनियां के हजार साल श्री राजजी का एक दिन होता है। हजार साल का दिन और सौ वर्ष की रात बीत जाने पर कल का दिन फजर का जाहिर किया।

सा कुंजी कागर मूं डेई, उपटे बका दर।
मूं गड्यूं से गिंनी आइस, रूहें छते घर।।११ ।।

यह इलम की कुंजी और कुरान का ज्ञान लेकर मैंने परमधाम के दरवाजे खोले। मुझे जो रूहें मिल गईं, मैं उन्हें लेकर शाकुण्डल (छत्रसाल) के घर आ गई।

मूं धणी जाहेर थेओ, दीन दुनी सुरतान।
गाल सुई सभनी, हिंदू मुसलमान।।१२ ।।

मेरे धनी तथा दुनियां के मालिक संसार में आ गए। इस बात को सब हिन्दू-मुसलमानों ने सुना।

वडी रांद डिखारिए, असां वड्यूं करे।
त पसूं वडाई अंखिएं, जे सभ दुनियां सई फिरे।।१३ ।।

आपने हमें संसार में बड़ा बनाकर बड़ा खेल दिखलाया। अब मैं अपनी बड़ाई अपनी आंखों से देखती हूं कि जब यह दुनियां मेरे हुकम से चले।

Nijanand App

पेरां कागर कई मूंके, आकीन डियण के सभन।
से निसान पुंना सभनी, केयां रांदमें रोसन।। १४ ।।

पहले सबको यकीन दिलाने के वास्ते कई कागज भेजे। सब भविष्यवाणी के निशान पूरे हो गए और खेल में सबको जानकारी मिली।

हे रोसन सभे पसी करे, असां दावो थेओ तोसे।
तांजे मुकाबिल न थिए, त आंऊं पल्लो पुजां के।। १५ ।।

यह जानकारी देखकर मेरा आपसे केस (दावा) खड़ा हुआ। यदि आप सामने न आए तो मैं किसका पल्ला पकड़ूं?

तांजे मूं कूडी करिए, त हितरो कुजाडो के के।
त हेडा कागर सभनी, कुरे के लिखे।। १६ ।।

यदि आप मुझे ही झूठा करना चाहते हैं तो फिर इतना सब कुछ किसके वास्ते किया? इतनी सब चिट्ठियां (ग्रन्थों में गवाहियां) किसके वास्ते लिखीं?

जे मूं कूडी करिए, त भले कूडी कर।
त पांहिजो नालो डेई, को लिखे कागर।। १७ ।।

यदि आप मुझे ही झूठा करना चाहते हो, तो भले ही करो, परन्तु आपने अपने नाम से इतनी चिट्ठियां क्यों लिखीं?

पट अर्स अजीम जो, मुराई कीं उघाडे।
जे मूं कोठिए लिकंदी, त आंऊं को न अचां लिके।। १८ ।।

परमधाम के दरवाजे आपने शुरू से ही क्यों खोल रखे हैं? यदि आप मुझे अकेले में छिपकर बुलाओ तो मैं छिपकर क्यों न आऊं।

एहेडी हुई तो दिलमें, त मूंके जाहेर को केइए।
इलम डेई मूं मंझ बेही, वैण वडा को कढे।। १९ ।।

यदि आपके दिल में ऐसी बात थी तो संसार में मुझे जाहिर क्यों किया? आपने हमारे अन्दर बैठकर अपना इलम देकर मेरे मुंह से इतने बड़े-बड़े वचन क्यों कहलवाए?

कोई तोके वैण विगो चोए, त से आंऊं सहां कीं।
मूं साहेदयूं सभ तोहिज्यूं, गिड्यूं मूर मुराई।। २० ।।

यदि आपको कोई उल्टा कहे तो मैं कैसे सहन करूं? मैंने शुरू से ही आपकी सब गवाहियां दी हैं।

डेई लदुन्नी इलम, मूंके परी परी समझाइए।
को हेड्यूं गाल्यूं मूं मुहां, दुनियांमें कराइए।। २१ ।।

आपने तारतम वाणी देकर मुझे तरह-तरह से समझाया। फिर ऐसी बड़ी बातें दुनियां में मेरे मुंह से क्यों कहलवाते हो?

Nijanand App

सभ जोर पांहिजो डेई करे, मूंके कमर बंधाइए।
बाकी रे कम थोरडे, मूंके को अटकाइए।। २२ ।।

अब आपने अपनी शक्ति देकर मेरे साहस को बढ़ाया। अब आपका थोड़ा सा काम और बाकी है। उसके लिए आपने क्यों मुझे अटका रखा है?

जे न थिए मुकाबिल मूंहसे, थिए कम हिन वेर।
त हिंनी तोहिजे कागरें, पांण के सचो चोंदा केर।। २३ ।।

यदि आप हमारे सामने नहीं आते, तो यह काम भी इस बार हो जाए, परन्तु आपने अपनी चिट्ठियों में जो लिखा है, उसे देखकर हमें सच्चा कौन कहेगा?

लाड असांजा रांदमें, तो पूरा सभ केयां।
जाहेर तो मुकाबिले, हितरे बंग रह्या।। २४ ।।

आपने सभी चाहना हमारी खेल में पूरी की है। अब आपको सामने आना है। बस, इतनी ही कमी रह गई है।

मूं हिये सल्ले अगियूं गालियूं, से वलहा कुरो चुआं।
सुन्दरबाई हल्ली विलखंदी, पण से कंने की न सुआं।। २५ ।।

मेरे दिल में पहले से ही बहुत बातें खटकती हैं। हे प्रीतम! वह मैं कैसे कहूं? सुन्दरबाई रोते-रोते चली गईं, परन्तु कान से आपने उनकी बातों को नहीं सुना।

सुंदरबाई जे बखतमें, मायाएं वडा डुख डिना।
भती भती विलखई, हे डिसी डुखडा किंना।। २६ ।।

सुन्दरबाई के समय माया ने बड़े दुःख दिए और तरह-तरह से रुलाया। उन दुःखों को देखकर मैं भी बिलखती रह गई।

आंऊं पण हुइस डुखमें, पण न सांगाएम आंसे।
मूं बेखबरी न जाणयो, से तो हांणे हिये चढ़ाया जे।। २७ ।।

मुझे भी दुःख हुआ, परन्तु मुझे उस समय आपकी पहचान नहीं थी। मैं बेखबर थी। जो मेरे दिल में वह बातें थीं, आपने अब चढ़ा दीं।

उलट्यो आं कागर में, लिख्यो सुंदरबाई जो डो।
ते कागर न वांचयो, पण मूं पांहिजे कंने सुओ।। २८ ।।

आपने उलटा कागज में (वाणी में) सुन्दरबाई को दोषी ठहराया। मैंने उस चिट्ठी को पढ़ा नहीं, परन्तु कान से सुना है।

से डुख सह्या असां रादंमें, तांजे सेई डिए आखिर।
से पण चाडियां सिर मथे, त सेंहेंदो हियो निखर।। २९ ।।

उस दुःख को मैंने सहन कर लिया और शायद अन्त तक सहन करना पड़ेगा। वह भी मैं अपने सिर पर लूंगी और अपने कठोर दिल से सहन करूंगी।

Nijanand App

ते लाये घणों को चुआं, तोके सभ मालुम।
से सभ तोहिजे हुकमें, असां केयां कम।। ३० ।।

इस वास्ते अब ज्यादा क्या कहूं? आपको सब मालूम है। यहां सब कुछ आपके हुकम से ही हम करते हैं।

जे सौ भेरां आंऊं विसरई, त पण आंहिजा सेंण।
पस तूं हिये पांहिजे, जे तो चेया वैण।। ३१ ।।

यदि हम सौ बार भी भूलें तो भी आप हमारे पति हैं। अब आप अपने दिल में देखो कि आपने हम से क्या वचन कहे थे?

हे पण कंदे गाल्यूं लाडज्यूं, तांजे विसरां थी।
संग जांणी मूरजो, थिए थी गुस्तांगी।। ३२ ।।

इतने पर भी मैं लाड़-प्यार की बातें करती हूं। शायद मैं भूल गई। मैंने अपना परमधाम का साथी जान कर मांगने की गुस्ताखी की है।

हांणे जे करिए हेतरी, जीं जेडियूं सभे पसन।
कर सचा अची मुकाबिलो, सुख थिए असां रूहन।। ३३ ।।

अब आप कम-से-कम इतना तो करो कि सब सखियां आप के दर्शन तो कर लें। आप मेरे सामने आ जाएं तो हम सब रूहों को सुख हो जाए।

हांणे निपट आए थोरडी, सुण कांध मूंह जी गाल।
डेई दीदार गाल्यूं कर, मूं वर नूरजमाल।। ३४ ।।

हे मेरे पति! मेरी यह बात सुनो। यह बात बहुत छोटी सी है। आप मेरे धनी हैं, इसलिए मुझे दर्शन दो। मुझसे बातें करो।

हांणे जे लाड असां जा, ब्या सचा जे पारीने।
मूं तेहेकीक आंझो तोहिजो, मूंके निरास न कंने।। ३५ ।।

अब हमारे लाड़-प्यार की जो जो चाहना बाकी हैं, वह आप सभी पूरी करो। मुझे केवल आप पर ही भरोसा है, इसलिए आप निराश न करें।

तूं पारीने उमेदूं वडियूं, असां ज्यूं तेहेकीक।
पण ते लांए थी विलखां, मथां आयो कौल नजीक।। ३६ ।।

मेरी बड़ी-बड़ी चाहनाएं हैं। यह बात निश्चित है कि आप उन्हें पूरा करेंगे, पर इस बात के लिए रोती हूं कि घर चलने का समय नजदीक आ गया है।

तूं थी धणी मुकाबिल, को रखे थोडे बंग।
मूं गिन्यूं साहेदयूं तोहिज्यूं, कई केयम दुनी से जंग।। ३७ ।।

हे धनी! आप सामने आइए। थोड़ी सी कमी बाकी क्यों रखी है। मैंने आपकी गवाहियां लेकर दुनियां से लड़ाई छेड़ रखी है।

Nijanand App

पोरयां तां सभ ईंदा, सभ सची चोंदा से।
जे असां बेठे अचे दुनियां, जे कीं डिसूं रांद ए।। ३८ ।।

पीछे तो सभी आएंगे और सच्ची बातें करेंगे, परन्तु हमारे यहां खेल में बैठे यह दुनियां वाले आ जाएं, तो हम भी कुछ खेल की लज्जत ले लें।

हितरो त आइम तेहेकीक, पोए मूं गाल सची सभ चोंदा।
असां हल्ले पोरयां, हथडा घणूं गोहोंदा।। ३९ ।।

यह बात तो निश्चित है कि मेरे पीछे मेरी बातों को सभी सत्य बोलेंगे। हमारे जाने के बाद हाथ मलते रहेंगे।

पण असल पांहिजी गिरोमें, जा रूहअल्ला चई।
सकुमार बाई गडवी, अजां सा पण न्हार सई।। ४० ।।

परन्तु हम रूहों की जमात में जैसा श्री श्यामाजी ने कहा था, उसी अनुसार शाकुमारबाई मिलीं, पर अभी तक वह साथ में आई नहीं हैं।

न तां कम सभ पूरो केयो, अने करिए पण थो।
कंने पण तेहेकीक, से पूरो आंझो आए तो।। ४१ ।।

वरना सब काम पूरे किए और आप करते भी हैं। यह भी निश्चित है कि आगे भी करोगे। ऐसा पूरा भरोसा आप पर है।

महामत चोए मूं वलहा, तोसे करियां लाड कोड।
केयम गुस्तांगी रांदमें, जे तो बंधाई होड।। ४२ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे मेरे प्यारे श्री राजजी महाराज! मैं आपसे बहुत प्यार करती हूं। खेल में जो गुस्ताखी की है, वह भी जब आपने हुज्जत बंधाई।

।। प्रकरण ।। ८ ।। चौपाई ।। ३८३ ।।

मारकंडजो दृष्टांत

चई सुंदरबाई असां के, मारकंड जी हकीकत।
ईं दर थी आंके खोलियां, आंजी पण ईं बीतक।। १ ।।

सुन्दरबाई (श्री श्यामाजी) ने हमको मारकण्ड की हकीकत बताई थी और कहा था कि तुम्हारी भी कुछ ऐसी कहानी है।

निमूनो मारकंड जो, चयो सुन्दरबाई भली भत।
सुकदेव आंदो आं कारण, हे जे पसो था हित।। २ ।।

मारकण्ड का नमूना सुन्दरबाई श्री श्यामाजी ने अच्छी तरह समझाया। शुकदेव मुनि ने भी तुम्हारे वास्ते कहा जो आप यहां देख रहे हैं।

जे कीं गुजरयो मारकंड के, विच जिमी हिन अभ।
से गुझ दिलजो निद्रमें, डिठो नारायणजी सभ।। ३ ।।

आसमान जमीन के बीच मारकण्ड ऋषि के ऊपर जैसी बीती, उसके दिल की छिपी बातों का पता नारायणजी को था।

Nijanand App